डॉ० शैलेंद्र मोहन मिश्र
सी०एम०जे० कॉलेज
दोनवारी हाट, खुटौना

मध्यकालीन मैथिली नाटक : एक परिचय

मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि कालविभाजन करैत काल मैथिली साहित्यक इतिहास कैं तीन काल खण्डमे विभाजित कयलनि अछि - आदिकाल , मध्यकाल ओ आधुनिक काल । मध्यकाल कैं नाटकक कालक संज्ञा देलनि अछि । मध्यकाल मे मिथिला मध्य संस्कृतक प्रचार - प्रसार अत्यधिक छल तैं संस्कृतमे साहित्यिक विधाक रचना होइत छल । मुदा किछु विद्वान लोकनि संस्कृत नाटक मध्य किछु मैथिली गीतक सन्निवेश कए भाषा नाटकक रचना कयलनि । मैथिली साहित्यमे सर्वप्रथम कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर भाषा गीतक सन्निवेश ' धूर्त समागम ' नाटकमे कयलनि । एकर पश्चात महाकवि विद्यापति 'गोरक्ष विजय ' मे मैथिली गीतक सन्निवेश कयलनि । मुदा संस्कृतक प्रभाव एकाएक लुप्त नहि भेल । केवल लोकक मनोरंजनक लेल प्राकृत एवं मैथिलीक प्रयोग भेल तैं , ' धूर्त समागम ' ओ ' गोरक्ष विजय ' कैं संस्कृत- प्राकृत - मैथिली त्रैभाषिक नाटक कहल जाइत अछि । शनैः शनैः संस्कृत - प्राकृतक प्रयोग घटैत जेल ओ शुद्ध मैथिली मे नाटकक रचना होमए लागल ।

मिथिला मध्य संगीत , नृत्य ओ अभिनयक परम्परा प्राचीन कालहिसँ अविच्छिन्न रूपैं प्रवाहित अछि । कर्णाट वंशक राजलोकनिक संगीतप्रियता अनेक मैथिल विद्वान कैं संगीत विषयक ग्रंथ लिखबाक प्रेरणा देलकनि । मिथिला मध्य अभिनयक परम्परा छल । ई एहि सँ प्रमाणित होइत अछि जे आसामक शंकरदेव तीर्थयात्राक क्रममे मिथिला अयलाह तथा एहिठामक अभिनय परम्परा सँ प्रभावित भेलाह । ओ स्वदेश प्रत्यागत भेला पर एकर अनुकरण मे नाटकक रचना कयलनि । नेपाल मध्य पाटन मे कार्तिक नाचक परम्परा मे विकृत मैथिली अभिनय परम्परा दृष्टिगोचर होइत अछि । एतावता ई निर्विवाद रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे मिथिला मे संगीत , नृत्य ओ अभिनयक कला बहुत प्राचीन कालहिसँ छल ।

डॉ० जयकांत मिश्रक कथन छनि जे - " एतवा त सत्य थिक जे संस्कृत नाटकक परम्परा पर मैथिली नाटकक प्रादुर्भाव भेलैक तैं ओकर आदिकाल मे स्वाभाविक जे संस्कृत नाटकक पूर्ण प्रभाव ओहि पर छलैक , भाषा नाटकक प्रादुर्भाव तहिना भेलैक जेना भाषा साहित्यक प्रादुर्भाव भेलैक । "

मैथिली नाटकक उत्पत्तिमे लोकनाचक सहयोग सेहो पर्याप्त मात्रा मे अछि । वस्तुतः संस्कृत नाट्य परम्परा ओ लोकनाट्य परम्परा मैथिली नाट्य साहित्यक स्वरूप निर्धारित करबामे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कयलक । एहि अभिनव नाट्य परम्परा मे मैथिली भाषाक प्रमुखता क्रम - क्रम सँ होइत गेल तैं एकर नाम मैथिली नाट्य परम्परा सैह भेल ।

मध्यकालीन मैथिली नाटककैं विकासक कारणें तीन भागमे विभक्त कयल अछि - 1. मिथिलाक मैथिली नाटक (कीर्तनियाँ नाट) 2. नेपालक मैथिली नाटक और 3. आसामक मैथिली नाटक अथवा अंकिया नाट । एहि निबंध मे मिथिलाक मैथिली नाटक पर विचार कयल गेल अछि ।

मिथिलाक मैथिली नाटक :

मैथिली साहित्यक एहि मध्ययुगमे संस्कृत विद्वान लोकनि द्वारा विरचित एक कोटिक मैथिली नाटक अछि जकरा कीर्तनियाँ नाटक कहल जाइछ । भगवान कृष्ण , शिव आदिक भक्ति सँ उत्प्रेरित हुनक चरित्र सँ सम्बद्ध पौराणिक कथावस्तुक आधार पर विरचित मैथिली गीतादि प्रधान , संस्कृत प्राकृत मिश्रित नाटक मैथिलीक कीर्तनियाँ नाटक कहबैत अछि । एहि कोटिक नाटकक रचना संस्कृत नाट्य साहित्यक अनुकरण सँ भेल । ई संस्कृतेक नाटक सँ विकसित ओ पूर्ण प्रभावित अछि । मंच निदेशन संस्कृत मे अछि ।

एहि ठाम हम ओहि समय मे लिखल गेल नाटकक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करैत छी , ततपश्चात मैथिलीक विद्वान आलोचक द्वारा एकरा नाच मानल जाय कि नाटक ताहि पर विचार करब ।

कीर्तनियाँ नाटकक विकास मे धूर्त समागम प्रहसन आओर गोरक्षविजय नाटक पहिल कड़ी मानल जाइत अछि , किन्तु कीर्तनियाँ नाटकक श्रीगणेश सत्रहम शताब्दी मे लिखल नाटक सभसँ मानल जाइत अछि ।

1. नलचरित वा नलोदय नाटक : एहि नाटकक रचना सत्रहम शताब्दी मे गोविंद मिश्र द्वारा कयल गेल । एहि नाटकक कथानक महाभारत सँ लेल गेल अछि । राजा नल जुआमे पुष्करक हाथे अपन समस्त सम्पत्तिक नाश कए दैत छथि । एहि क्रममे ओ अपन पत्नी दमयंतीकें नैहर जयबाक हेतु कहैत छथि किन्तु ओ नहि मानैत छथि । एहि नाटक मध्य संस्कृत ओ प्राकृतिक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । तथापि सरस चमत्कारपूर्ण मैथिली गीतक सन्निवेशक कारणें ई मैथिली नाटक थिक । जें कि एखनहुँ धरि नलकें प्रातः स्मरणीयाक रूपमे जानल जाइत अछि तें विद्वान एकरा कीर्तनियाँ नाटक मानल अछि ।
2. आनंद विजयाविधान नाटिका : सरसकवि रामदास रचित सत्रहम शताब्दीक एक गोट नाटक ' आनंद विजयाविधान ' उपलब्ध होइत अछि । एकर कथावस्तु श्री राधा कृष्णक अलौकिक प्रेमसँ सम्बद्ध अछि । कथोपकथन संस्कृत , प्राकृत ओ मैथिली गीत मिश्रित अछि । चारि अंकक एहि नाटिका मे 31 गोट गीत अछि।
3. उषाहरण : एहि नाटकक रचनाकाल सत्रहम शताब्दी मे मानल जाइत अछि । एहि नाटकक रचनाकार छलाह देवानंद। छओ अंकक एहि नाटकक कथानक श्रीमद्भागवत सँ लेल गेल अछि जाहि मे अनिरुद्ध ओ उषाक प्रेमलीलाक वर्णन अछि । एहूमे संस्कृत प्राकृतक संग सरस मैथिली गीतक सुंदर समावेश भेल अछि ।
4. रुक्मिणीहरण नृत्य : एहि नाटकक रचयिता छथि सत्रहम शताब्दीक प्रसिद्ध विद्वान ब्रम्हदास । ई श्रीमद्भागवत पुराणक कथावस्तु पर आधारित , मैथिली गीत प्रधान नृत्य नाटिका अछि । एहिमे अंकक योजना नहि अछि एवं नृत्यक प्रधानताक कारणें एकरा रुक्मिणीहरण नृत्य कहल जाइत अछि ।
5. पारिजातहरण नाटक : मध्यकालीन मैथिली नाट्य परम्परामे सभसँ वेशी प्रसिद्ध जे नाटक अछि ओ थिक अठारहम शताब्दीमे उमापति उपाध्याय विरचित ' पारिजातहरण ' नाटक । एकर कथावस्तु मुख्यतः हरिवंश सँ लेल गेल अछि । नारद द्वारा देल गेल पारिजात पुष्प कृष्ण द्वारा रुक्मिणी कें देला पर सत्यभामा मान करैत छथि तथा सत्यभामाक मानक अपनोदनक हेतु कृष्ण इन्द्रक वाटिका सँ पारिजात वृक्षक हरण कए अनैत छथि । एहिमे 21 गोट मैथिलीक गीत अछि जे नाटकमे केवल संगीतमय वातावरने टा उपस्थित नहि करैछ , अपितु कथानकक विकासो मे योगदान करैछ । वीर रस मुख्य अछि तथा श्रृंगार रस अंग रूपमे अछि ।
6. रुक्मिणी परिणय : अठारहम शताब्दी मे रचित एहि नाटकक रचयिता छथि , रमापति उपाध्याय । ई संस्कृत प्राकृत तथा मैथिली गीत मिश्रित नाटक अछि । मैथिली गीतक प्रधानता अछि । संस्कृत आ प्राकृतक अंश गौण अछि । नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । नाटकमे शुद्ध संस्कृत नाटकक टेकनीक अछि ।
7. गौरी स्वयंवर नाटक : कविलाल द्वारा रचित एहि नाटकक रचना काल अठारहम शताब्दीक मध्यभाग मानल गेल अछि , शिव पार्वतीक विवाह सँ संबंधित विषय पर आधारित अछि । एहिमे संस्कृत ओ प्राकृतक अंश अत्यंत गौण अछि । नाटकक कलेवर मुख्यतः मैथिली गीते पर ठाढ़ अछि । एहिमे नैनायोगिन , कोबर, परिछनि आदि मिथिलाक सांस्कृतिक परम्पराक प्रतिपादन कयल गेल अछि । ई विशुद्ध कीर्तनियाँ पद्धति पर लिखल गेल अछि ।
8. कृष्णकेलिमाला : नंदीपति द्वारा लिखल एहि नाटकक रचनाकाल अठारहम शताब्दीक अंतिम भाग मानल जाइत अछि । संस्कृत - प्राकृत एवं मैथिली गीत मिश्रित एहि नाटकक कथावस्तु श्रीमद्भागवतक श्रीकृष्ण लीलासँ संबंधित अछि । ई नाटक अभिनय करबासँ बेसी पढबा ओ गयबाक हेतु अछि । तत्कालीन मैथिल समाज मे प्रचलित अंधविश्वास आदिक चित्रांकन नीक जकाँ भेल अछि ।
9. मानचरित नाटक : एहि नाटकक रचनाकाल अठारहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मानल जाइत अछि । एकर रचयिता छलाह गोकुलानंद । ई सात अंकक नाटक अछि । श्री राधा कृष्णक प्रेमलीलासँ सम्बद्ध एकर कथावस्तु अछि । मैथिली नंदी गीतमे सरस्वतीक वंदना कयल गेल अछि ।
10. रुक्मांगद नाटक : एहि नाटकक रचयिता कर्ण जयानंद छथि । एकर रचनाकाल अठारहम शताब्दीक अंतिम भाग मानल जाइत अछि । अर्द्धनारीश्वर शिवक कयल अछि । संस्कृत प्राकृतक संग- संग मैथिली गीतक समावेश एहू मध्य कएल गेल अछि ।
11. पारिजातहरण : शिवदत्त विरचित पारिजात हरणक कथावस्तु उमापति रचित पारिजात हरण जकाँ अछि । संस्कृत - प्राकृत मैथिली मिश्रित एहि नाटकक प्रसिद्धि उमापति विरचित पारिजात हरण नाटक सन नहि अछि ।

12. गौरी परिणय : एकर रचना काल उन्नीसम शताब्दीक पूर्व भाग मानल गेल अछि । एकर रचयिता छलाह शिवदत्त । एहिमे शिव गौरी विवाहक कथा वर्णित अछि । एहिमे संस्कृत प्राकृत कथोपकथनक पूर्णतः अभाव अछि दृश्य विधान , रंगमंचीय निर्देश कथोपकथन आदि सभ किछु मैथिली गीतमे अछि ।

13. श्रीकृष्ण जन्म रहस्य : उन्निसम शताब्दीक मध्यभागमे श्रीकांत गणक रचित श्री कृष्णजन्म रहस्य नाटक संस्कृत नाट्यशैली पर आधारित अछि तथा एहिमे विष्णुपुराण आधारित कृष्ण जन्मक कथा वर्णित अछि । एहिमे कथोपकथन संस्कृत प्राकृतमे तथा मैथिलीमे गीत अछि । एहिमे दू गोट अंकक योजना भेल अछि । मैथिली गीतक चारुता तथा नाटकीय रोचकता पाओल जाइत अछि ।

14. गौरी स्वयंवर नाटक : कान्हा रामदास द्वारा उनैसम शताब्दीक मध्यभागमे एहि नाटकक रचना मानल गेल अछि । ई मैथिली गीतमय नाटक अछि । एहि नाटकमे सतीक दग्ध होयबाक कथा ओ पुनः गौरीक रूपमे जन्म लेबाक कथा वर्णित अछि। ताड़कासुरक वधक लेल महादेव ओ गौरीक विवाह होयब अनिवार्य छल । कामदेव द्वारा जखन महादेवक तपस्या भंग करबाक चेष्टा कएल जाइत अछि आओर एहि क्रममे ओ हुनक कोपभाजन भए भस्म होइत छथि । रतिक विलाप सुनि महादेव कहैत छथि जे कृष्णक बालकक रूपमे अहाँक पति अहाँ कें भेटताह एकर पश्चात महादेवक विवाह गौरीक संग होइत अछि ।

एहि नाटकमे कथानकक विकास घटनाक संयोजन नीक जकाँ देखाओल गेल अछि । रंगमंचीय निर्देश संस्कृतमे अछि । किन्तु विभिन्न रागमे निबद्ध मैथिली गीतक नाटकमे प्रधानता अछि ।

15. उषाहरण नाटिका : एहि नाटिकाक रचयिता रत्नपाणीक समय इतिहासकार लोकनि उनैसम शताब्दीक मध्यभाग माननलनि अछि । एहि नाटिकाक कथावस्तु हरिवंशक विष्णुपर्व सँ लेल गेल अछि । एहि मे वाणासुरक पुत्री ओ अनिरुद्धक विवाहक कथा वर्णित अछि । एहि मे कथोपकथन मैथिली मे तथा नाटकीय निर्देश , मंगल श्लोक आदि संस्कृतमे अछि । मिथिलाक भाषाक दृष्टिएँ ई नाटिका अपूर्व प्रतीत होइत अछि । मैथिली गीतक प्रचुर प्रयोग भेल अछि । श्रृंगार रस प्रधान अछि ।

16. प्रभावती हरण : भानुनाथ झा प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भाना झा विरचित एहि नाटकक रचना काल उनैसम शताब्दीक मध्यभाग मानल जाइत अछि । एहि नाटकक कथावस्तु पौराणिक अछि । एहिमे वज्रनाभ दैत्यक कन्या प्रभावतीक हरण तथा प्रद्युम्नक संग ओकर विवाहक कथा वर्णित अछि । विद्यापतिक गीत सँ प्रभावित मैथिली गीतक प्रधानता अछि । रंग निर्देश संस्कृत मे अछि ।

17. उषाहरण : एहि नाटकक रचयिता कविवर हर्षनाथ झा छथि , जनिक समय उनैसम शताब्दीक अंतिम भाग अछि । एहिमे संस्कृत नाट्य शैलीक पूर्ण अनुसरण कएल गेल अछि । एहिमे पाँच गोट अंक अछि । एकर कथावस्तु हरिवंश ओ भागवत सँ लेल गेल अछि । रचना ओ नाटकीयताक दृष्टिएँ ई उत्कृष्ट कोटिक नाटक मानल जा सकैछ ।

18. माधवानंद नाटक : कविवर हर्षनाथ झा रचित ई नाटक संस्कृत नाट्य परम्पराक अनुरूप रचित अछि । एहू नाटकक रचनाकाल उनैसम शताब्दीक अंतिम भाग मानल जाइत अछि ।श्रीमद्भागवतक रासपंचाध्यायी सँ कथावस्तु लए श्रीराधाकृष्णक प्रेमलीलाक सुंदर एवं मनोहर वर्णन कएल गेल अछि ।

19. मैथिली गीतमय नाटक : पं० हर्षनाथ झाक अनुसरण करैत पं० विश्वनाथ झा प्रसिद्ध बालाजी श्रीराधाकृष्णक प्रेमलीला पर आधारित एक मैथिली गीतमय नाटक लिखल । एहि गीत सभपर महाकवि विद्यापतिक स्पष्ट प्रभाव अछि ।

20. अहल्या चरित नाटक : कवीश्वर चन्दा झा रचित नाटक जकर कथा रामायण सँ लेल गेल अछि जाहिमे गौतम मुनिक पत्नी अहल्याक रामचंद्र द्वारा उद्धारक कथा वर्णित अछि । एहि नाटक मध्य कवि अपन विद्वता ओ पाण्डित्य कें गीतक माध्यमे देखाओल अछि।

21. राजराजेश्वरी नाटक : एहि नाटकक रचयिता छलाह राजपंडित ज्योतिषी बलदेव मिश्र । एकर कथानक स्कन्द पुराण पर आधारित अछि । पार्वतीक प्रायश्चित ओ ताड़काक वध एहि नाटकक प्रमुख वर्ण्य विषय अछि । एहिमे नओ गोट अंक अछि , महेशवाणी , नचारी , पमरिया आदिक गीत एहि नाटकक विशेषता कें बढ़बैत अछि ।

22. रमेशोदय नाटक : महाराज रमेश्वर सिंहक जीवन चरित पर आधारित राजपण्डित बलदेव मिश्र द्वारा रचित एक दोसर नाटक थिक । कीर्तनियाँ नाटकक परम्परा मे पं० बलदेव मिश्रक नाटक प्रायः अंतिम नाटक अछि ।